शिव पञ्चाक्षरस्तोत्रम्

श्लोक १

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥

उन भगवान शिव को नमस्कार, जिन्होंने अपने गले में नागेन्द्र अर्थात् नागराज को हार
के रूप में धारण किया है;
जिन त्रिलोचन भगवान की देह भस्म से सुशोभित है;
जो नित्य व शुद्ध हैं और जिन्होंने चारों दिशाओं को, आकाश को वस्त्र के रूप में धारण किया है।
'न' अक्षर का स्वरूप धारण करने वाले उन भगवान शिव को, मैं नमन करता हूँ।

श्लोक २

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥

उन भगवान को नमस्कार, जिनका अभिषेक गंगाजल से किया जाता है
और जिनके शरीर पर चन्दन का लेप लगाया जाता है;
जो नन्दी के स्वामी हैं और
प्रमथगण जिनके अनुचर हैं;
तथा मन्दारवृक्ष के पुष्पोंसहित अनेकानेक पुष्पों से जिनका पूजन किया जाता है।
'म' अक्षर का स्वरूप धारण करने वाले उन भगवान शिव को, मैं नमन करता हूँ।

श्लोक ३

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥

उन भगवान शिव को नमस्कार, जो वह सूर्य हैं जिनकी प्रभा से
भगवती गौरी का तेजोमय मुखमण्डल ऐसे खिल उठता है जैसे अनेकानेक कमलपुष्प खिले हों;
जो दक्षयज्ञ का विध्वंस करने वाले हैं; जो ज्योतिर्मय श्रीनीलकण्ठ हैं और
जो अपने ध्वज पर वृषभ का चिह्न धारण करते हैं।
'शि' अक्षर का स्वरूप धारण करने वाले उन भगवान शिव को, मैं नमन करता हूँ।

श्लोक ४

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥

उन देवाधिदेव महादेव को नमस्कार, जिनकी पूजा-अर्चना वसिष्ठ, अगस्त्य,
गौतम आदि श्रेष्ठ मुनि तथा इन्द्र व अन्य देवता करते हैं;
और सूर्य, चन्द्र व अग्नि जिनके नेत्र हैं।
'व' अक्षर का स्वरूप धारण करने वाले उन भगवान शिव को, मैं नमन करता हूँ।

श्लोक ५

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥

उन भगवान को नमस्कार, जिन्होंने एक यक्ष का स्वरूप धारण किया;
जो जटाधर हैं और जो अपने हाथ में त्रिशूल धारण करते हैं;

जो सनातन व दिव्य हैं और दिशाएँ जिनके वस्त्र हैं।
'य' अक्षर का स्वरूप धारण करने वाले उन भगवान शिव को, मैं नमन करता हूँ।

श्लोक ६

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

जो मनुष्य भगवान शिव के सान्निध्य में इस पुण्यमय पञ्चाक्षर मन्त्र का पाठ करता है,
उसे शिवलोक प्राप्त होता है और उस लोक में वह भगवान शिव के साथ मुदित रहता है।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।